Dr.Sunita Kumari, Guest Asst Prof,
Dept of H.Sc
SNSRKS College, Saharsa
Study Material-BA Part-II (H.)

गृह-प्रबंध का क्षेत्र
(Scope of Home Management)

गृह प्रबन्ध अपने आप में एक व्यापक विषय है। इसका संबंध सभी क्रियाओं या संस्थाओं के लगभग सभी विषयों से है। वस्तुतः प्रबन्ध प्रत्येक कार्य क्षेत्र का आधार होता है। गृह प्रबन्ध, गृह विज्ञान की एक शाखा है।

जैसे ही कहीं किसी परिवार का निर्माण होता है वैसे ही गृह-प्रबंध का क्षेत्र प्रारंभ हो जाता है। एक घर या परिवार में विभिन्न आयु-वर्ग के तथा विभिन्न प्रकृति के ऐसे व्यक्ति रहते हैं जो परस्पर स्नेह, सद्भावना, पारस्परिक सामंजस्य एवं समझ तथा कतिपय समान रुचियों आदि से निश्चित सूत्र से जुड़े हुए होते हैं अतः गृह-प्रबंध का क्षेत्र इनकी भावनाओं, अनुभूतियों, अनुभवों, आशा-अभिलाषाओं, क्षमताओं तथा परिवार रूपी मानवीय संस्था के विभिन्न पक्षों का भी अपने में समाहित करता है।

सीमित स्तर पर गृह-प्रबंध के प्रमुख हैं- वित्त, आहार एवं पोषण, बाल-विकास, कपड़ा एवं पोशाक, पारिवारिक संबंध, अंतरपारिवारिक संबंध तथा परिवार-समाज संबंध। इनका विस्तृत विवरण इस प्रकार हैं:-

(1) आहार एवं पोषण :- गृह-प्रबंध का महत्वपूर्ण क्षेत्र आहार एवं पोषण है। भोजन मनुष्य की मूलभूत आवश्यकताओं में प्रथम है। अतः गृह-प्रबंध के अंतर्गत परिवार के सदस्यों के लिए आहार की व्यवस्था करना सर्वप्रथम पारिवारिक उत्तरदायित्व होता है। परिवार के सदस्यों के लिए आहार की व्यवस्था करने के पूर्व निम्न दो प्रमुख बातों पर ध्यान देना आवश्यक है, वे हैं- • भोजन का संतुलित एवं स्वास्थ्यप्रद होना तथा • भोजन का स्वादिष्ट एवं सुरुचिपूर्ण होना। गृह-प्रबंध के समुचित ज्ञान से युक्त सुयोग्य गृहिणी के लिए यह कठिन नहीं होता है।

(2) वित्तीय प्रबंध :- गृह-प्रबंध के विभिन्न क्षेत्रों में वित्तीय प्रबंध सर्वाधिक महत्वपूर्ण है। हमारे देश में प्रायः परिवार के लिए वित्त का प्रबन्ध करने का मुख्यतः उत्तरदायित्व पुरुषों का होता है। एक गृह में अपने परिवार के बीच गृहिणी को प्रधानतः आहार, वस्त्र, आवास, शिशु-पालन एवं पारिवारिक संबंध से जुड़ी हुई समस्याओं के

समाधान की व्यवस्था करनी होती है। इनका प्रबंध करना मुख्यतः उन्हीं का काम है। अगर गृहिणी इन सभी की व्यवस्था कुशलतापूर्वक कर लेती है, तब निश्चय ही वह उत्तम गृह-प्रबंध कर लेने का श्रेय प्राप्त कर सकती है।

(3) कपड़ा एवं पोशाक :— मानव की मूलभूत आवश्यकताओं में द्वितीय स्थान वस्त्र का है। इसकी आवश्यकता जाड़ा, गर्मी, वर्षा, लू, ओला आदि से सुरक्षा प्रदान करने के लिए होती है। इनके पश्चात इसकी आवश्यकता शरीर को सजाने-संवारने, व्यक्तित्व में निखार लाने के लिए भी होती है। गृहिणी को इनकी पूर्ति के लिए प्रबंध करना होता है। अगर उन्हें विभिन्न प्रकार के रेशों, धागों की कताई, कढ़ाई, बुनाई, सिलाई, कढ़ाई, धुलाई, रंगाई, इस्तरी करने आदि का समुचित ज्ञान हो तो उसके लिए कपड़ा एवं पोशाक की व्यवस्था करना सरल हो जाता है।

(4) आवास :— मानव की मूलभूत आवश्यकताओं में इसका तीसरा स्थान है। घर में उपलब्ध स्थल का सर्वाधिक लाभप्रद उपयोग किस प्रकार किया जा सकता है, इसका ज्ञान इसे रहना चाहिए।

(5) बाल विकास एवं पारिवारिक संबंध :— अंग्रेजी में एक उक्ति है "Child is the father of Man". बालक ही राष्ट्र के भावी कर्णधार होते हैं। परिवार के बालकों को स्वस्थ रूप से विकसित होने का अवसर एवं साधन प्राप्त कराने में उनके अभिभावकों, विशेष रूप से उनकी माताओं का महत्वपूर्ण योगदान रहता है। आधुनिक बाल-मनोविज्ञान की मान्यता है कि बालविकास में पारिवारिक संबंध का विशेष महत्व होता है।

अतः यह आवश्यक है कि गृह-प्रबंध ऐसा हो जिससे परिवार को स्नेह, सद्भावना, पारस्परिक सामंजस्य, सम्मान तथा अनुशासन से युक्त पर्यावरण मिले। ऐसे पर्यावरण में पलने वाला बालक निश्चय ही भविष्य में सुयोग्य नागरिक बन सकेगा।

(6) अंतः पारिवारिक संबंध :— एक घर में एक या अनेक परिवार रह सकते हैं। एक परिवार में माता-पिता, उनकी संतान तथा उनसे संबंधित अन्य व्यक्ति रह सकते हैं। एक परिवार के सभी सदस्यों तथा विभिन्न परिवारों के

सदस्यों के बीच आदर्श पारिवारिक संबंध स्थापित करना तथा उसे बनाए रखने का महत्वपूर्ण दायित्व बहुत हद तक गृहिणी पर होता है। एक गृहिणी को पुत्री, पत्नी, पतोह, माता तथा सास के रूप में भूमिकाएं निभानी पड़ती हैं। गृह-प्रबंध में इस बात पर भी समुचित ध्यान दिया जाता है कि गृहिणी अपने इस दायित्व को सफलतापूर्वक निभा सके।

(7) परिवार-समाज संबंध :- मनुष्य समाज में रहने वाला प्राणी है। गृहिणी अपने समाज की महत्वपूर्ण सदस्या होती है। वह अपने देश की नागरिक भी होती है। अतः अपने समाज और देश के प्रति उसका निश्चित कर्तव्य होता है। अपने परिवार एवं समाज के बीच आदर्श संबंध बनाए रखने का महत्वपूर्ण दायित्व उसके कंधों पर होता है। उसका गृह-प्रबंध तभी उत्तम कोटि का होगा, जब वह अपने परिवार को समाज एवं राष्ट्र के लिए उपयोगी बना सकेगी। इस प्रकार, गृह-प्रबंध के अंतर्गत परिवार-समाज संबंधों को आदर्श स्वरूप प्रदान करने का प्रयास किया जाता है।

निष्कर्षतः यह कहा जा सकता है कि गृह-प्रबंध मानव-जीवन के विभिन्न पहलू से व्यापक एवं गहन रूप से जुड़ा हुआ है।